ध्यान दें:

12

रामायण

हम इस संस्कृत की महत्ता को स्पष्ट रुप से नहीं जानते है। संस्कृत ही देवों तथा वेद दृष्टा ऋषियों की भाषा है। इस भाषा के व्यवहार से हम गर्व का अनुभव करते हैं। किन्तु पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण करते हुए कोई दिग्भ्रष्ट भी पुन: प्रबोध को प्राप्त कर इसके व्यवहार में गर्व को अनुभव करता है। 'संस्कृत और संस्कृति सहगामिनी है' ऐसा स्वामी विवेकानन्द ने कहा है। अत: अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए हम सभी को ही विशेषत: भारतीयों के द्वारा संस्कृत का सम्मान अवश्य करना चाहिए। इस सम्पूर्ण जगत में संस्कृत के बहुत से मनोहर काव्य रत्न हैं। उनमें अब तक आदिकाव्य रामायण प्रसिद्ध है। इस महाकाव्य के रचयिता महर्षि वाल्मीकि हैं। वाल्मीकि के विषय में हम सब ही जानते हैं कि रत्नाकर नामक कोई डाकू नारद मुनि से कहे गए और ऋषि रूप से परिवर्तित ज्ञान को प्राप्त करके भगवान श्री राम के वृतान्त को रामायण काव्य में निबद्ध किया।

राम का मार्ग जिस काव्य में वह रामायण, यह रामायण शब्द की व्युत्पत्ति है। अर्थात् भगवान श्री राम जिस मार्ग से जीवन यापन करते है उस विषय में जिस काव्य में वर्णित है, वह काव्य ही रामायण है। सम्पूर्ण रामायण ग्रन्थ में 24000 श्लोक हैं। वहाँ सात काण्डों में ये श्लोक विभक्त है। इस संसार में किस प्रकार से रहना चाहिए इस विषय में स्पष्ट ज्ञान रामायण में प्राप्त होता है। इसीलिए आज भी भारतवर्ष के बहुत से घरों में रामायण को पढ़ा जाता है। संस्कृत जगत में बहुत से रमणीय महाकाव्य होने पर भी लोगों के हृदय में रामायण का जो स्थान है उसे प्राप्त करने के लिए वे काव्य अयोग्य है। प्राय: सभी भारतीय बिना प्रयास के ही माता अथवा पितामही के मुख से रामायण की कथा को सुनते हैं। भारतवर्ष में कुछ ही ऐसे प्राप्त होते है जो रामायण की कथा को नहीं जानते हैं। रामायण के सातों काण्डों में किष्किन्धाकाण्ड अत्यन्त प्रसिद्ध है। उस काण्ड में वर्तमान राम हनुमान का प्रथम संवाद सहृदयों को बार बार आह्लादित करता है। इस विषय पर लोगों ने बहुत सुना और दूरदर्शनादि पर देखा। परन्तु वाल्मीकि रामायण के पढ़ने से जैसा स्पष्ट बोध होता है, वैसा बोध दूसरे पथ से नहीं होता। अत: संस्कृत भाषा को सम्यक् रूप से जानने के लिए हमें वाल्मीकि विरचित रामायण को अवश्य पढ़ना चाहिए।

रामायण- राम हनुमान मिलन

इस जगत में प्रसिद्ध प्रह्लादादि भक्तों में से एक हनुमान हैं। यह हनुमान भगवान राम का महान भक्त है। स्वयं के सम्पूर्ण हृदय में केवल राम ही विराजित है यह देखने के लिए उन्होंने अपने वक्ष को चीरकर वहाँ श्री राम और प्रभुपत्नी सीता विराजित है इस प्रकार देखा । आज भी कहते हैं कि जहाँ-जहाँ

पाठ-12

रामायण

ध्यान दें:

राम का कीर्तन किया जाता है वहाँ-वहाँ हनुमान आज भी उपस्थित होते हैं। इस प्रकार के भक्त का प्रभु के साथ प्रथम साक्षात्कार कैसा था इस प्रकार के चिन्तन से ही हमारे मन में महान आनन्द उत्पन्न होता है। इसीलिए इस पाठ में हम उनके प्रथम साक्षात्कार को सप्रसंग देखेंगे। वहाँ हनुमान सुग्रीव के आदेशानुसार भिक्षुक के वेश में राम लक्ष्मण के परिचय को जानने के लिए उनके समीप जाता है। इस पाठ में दस श्लोक है। इस पाठ को पढ़ने से अवश्य ही हमें महान आनन्द होगा।

उद्देश्य

- इस पाठ को पढ़कर आप समर्थ होंगे;
- राम हनुमान के प्रथम साक्षात्कार के विषय में;
- हनुमान के वाणी माधुर्य को जान पाने में;
- राम लक्ष्मण की वीरता विषयक बोध प्राप्त करने में;
- रामायण काल में लोगों का व्यवहार कैसा था यह जानने में;
- श्लोक में स्थित पदों का अन्वय किस प्रकार से करना चाहिए यह जानने में;
- श्लोकों की व्याख्या किस प्रकार से करनी चाहिए इस विषय में;
- उपमा अलंकार के विषय में कुछ ज्ञान प्राप्त करने में;

12.1) मूल पाठ

वचो विज्ञाय हनुमान् सुग्रीवस्य महात्मनः।
पर्वतात् ऋष्यमूकात् तु पुप्लुवे यत्र राघवौ॥1॥

कपिरूपं परित्यज्य हनुमान् मारुतात्मजः
भिक्षारूपं ततो भेजे शठबुद्धितया कपिः॥2॥

ततस्स हनुमान् वाचा श्लक्ष्णया सुमनोज्ञया।
विनीतवत् उपागम्य राघवौ प्रणिपत्य च॥3॥

आबभाषे च तौ वीरौ यथावत् प्रशशंस च।
संपूज्य विधिवद् वीरौ हनुमान् वानरोत्तमः॥4॥

उवाच कामतो वाक्यम् मृदु सत्यपराक्रमौ।
राजर्षिदेवप्रतिमौ तापसौ संशितव्रतौ॥5॥

देशम् कथम् इमम् प्राप्तौ भवन्तौ वरवर्णिनौ।
त्रासयन्तो मृगगणान् अन्यांश्च वनचारिणः॥6॥
पम्पातीररुहान् वृक्षान् वीक्षमाणौ समन्ततः।
इमाम् नदीं शुभजलां शोभयन्तौ तरस्विनौ॥7॥

धैर्यवन्तो सुवर्णाभौ कौ युवाम् चीरवाससौ।
निःश्वसन्तौ वरभुजौ पीडयन्ताविमाः प्रजाः॥8॥

ध्यान दें:

सिंहविप्रेक्षितौ वीरौ महाबलपराक्रमौ।
शक्रचापनिभे चापे गृहीत्वा शत्रुनाशनौ॥9॥

श्रीमन्तौ रूपसंपन्नो वृषभश्रेष्ठविक्रमौ।
हस्तिहस्तोपमभुजौ द्युतिमन्तौ नरर्षभौ॥10॥

12.2) अब मूल पाठ को समझें

वचो विज्ञाय हनुमान् सुग्रीवस्य महात्मनः।
पर्वतात् ऋष्यमूकात् तु पुप्लुवे यत्र राघवौ॥1॥

अन्वय- हनुमान् महात्मनः सुग्रीवस्य वचः विज्ञाय यत्र राघवौ आस्ताम्, ऋष्यमूकात् पर्वतात् तु तत्र पुप्लुवे।

अन्वयार्थः- हनुमान महाबुद्धिशाली सुग्रीव नामक वनराज के वचनों को जानकर जहाँ राम और लक्ष्मण थे, ऋष्यमूक पर्वत से वहाँ गए।

सरलार्थः- सुग्रीव के सचिव हनुमान कपिराज के सुग्रीव के वचनों के अनुसार राम लक्ष्मण के स्वरूप को जानने के लिए ऋष्यमूक पर्वत से उनके समीप गए।

तात्पर्यार्थः- इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने राम लक्ष्मण के साथ हनुमान के प्रथम साक्षात्कार को कहना आरम्भ किया। कपिराज सुग्रीव ने धनुष बाणादि शस्त्रों से युक्त, बड़ी भुजाओं से युक्त राम लक्ष्मण को दूर से देखा, इसीलिए उन दोनों को बाली ने भेजा है ऐसा मानकर वह डर गया। इसीलिए वह उन दोनों के आगमन कारण के ज्ञान हेतु अपने सचिव हनुमान को आदेश दिया। और हनुमान उसके वचनानुसार उन दोनों के आगमन कारण को जानने के लिए ऋष्यमूक पर्वत से उन दोनों के पास प्रस्थान किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- विज्ञाय- वि + ज्ञा धातु + ल्यप् प्रत्यय।
- पुप्लुवे- गमनार्थक प्लुङ् धातु लिट् लकार प्रथम पुरुष एक वचन।

सन्धि युक्त शब्द

- वचो विज्ञाय - वचः + विज्ञाय विसर्ग सन्धि।
- पर्वतादृष्यमूकात्- पर्वतात् + ऋष्यमूकात् जशत्व सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- हनुमता महात्मनः सुग्रीवस्य वचः विज्ञाय यत्र राघवाभ्याम् अभूयत, ऋष्यमूकात् पर्वतात् तु तत्र पुप्लुवे।

कपिरूपं परित्यज्य हनुमान् मारुतात्मजः
भिक्षुरुपं ततो भेजे शठबुद्धितया कपिः॥2॥

अन्वय- मारुतात्मजः कपिः हनुमान् शठबुद्धितया कपिरूपं परित्यज्य ततः भिक्षुरूपं भेजे।

अन्वयार्थः- वायुपुत्र वानर हनुमान चपल बुद्धि से वानर रूप को त्यागकर फिर भिक्षुरूप को धारण करता है।

ध्यान दें:

सरलार्थः:- वायु पुत्र हनुमान चपल बुद्धि से अपने स्वरूप वानर रूप को छिपाकर भिक्षुक वेश को धारण करके राम लक्ष्मण के समीप गया।

तात्पर्यार्थः:- वानरों की शठ बुद्धि संसार में प्रसिद्ध है। इसीलिए सुग्रीव के वचनानुसार राम लक्ष्मण के पास जाने के लिए उद्यत हनुमान ने सोचा कि- हनुमान तो वानर है इसीलिए वह भी शठ बुद्धि से सम्पन्न है ऐसा जानकर राम यदि उसके साथ संवाद नहीं किया तो। इसीलिए उसने अपने वानर स्वरूप को छिपाकर भिक्षुक के वेश को धारण किया। भिक्षुक आदि दरिद्र मनुष्यों पर महात्मा सदा ही दया भाव दिखाते हैं। इसीलिए राम लक्ष्मण भी भिक्षुक वेशधारी उस पर दया भाव होगा ऐसा हनुमान ने सोचा। इसीलिए उस रूप को त्यागकर भिक्षुक रूप ही ग्रहण किया। महर्षि वाल्मीकि ने हनुमान के बुद्धि प्रभाव का भी वर्णन प्रस्तुत श्लोक में किया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- परित्यज्य - परि + त्यज् धातु + ल्यप् प्रत्यय।
- मारुतात्मजः- मारुतस्य आत्मजः मारुतात्मजः- षष्ठी तत्पुरुष।
- भेजे- भज् धातु लिट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन।

सन्धि युक्त शब्द

- ततो भेजे- ततः+ भेजे विसर्ग सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- मारुतात्मजेन कपिना हनुमता षठबुद्धितया कपिरूपं परित्यज्य ततः भिक्षुरूपं भेजे।

ततस्स हनुमान् वाचा श्लक्ष्णया सुमनोज्ञया।
विनीतवत् उपागम्य राघवौ प्रणिपत्य च॥३॥
आबभाषे च तौ वीरौ यथावत् प्रशशंस च।

अन्वय- ततः विनीतवत् हनुमान तौ वीरौ राघवौ उपागम्य प्रणिपत्य च श्लक्ष्णया सुमनोज्ञया वाचा आबभाषे यथावत् प्रशशंस च।

अन्वयार्थः:- भिक्षुरूप को धारण करने बाद हनुमान ने विनम्रता से उन दोनों वीरों राम और लक्ष्मण के समीप आकर प्रणाम किया और सुमधुर मनोहर वाणी बोले और उचित प्रकार से प्रशंसा की।

सरलार्थः:- भिक्षुक वेशधारी हनुमान विनम्रता से राम लक्ष्मण के पास गए। और वहाँ जाकर उसने प्रारम्भ में उन दोनों को प्रणाम किया। उसके बाद अपनी सुमधुर और रम्य वाणी से उन दोनों के साथ वार्तालाप आरम्भ किया और फिर उन दोनों वीरों की उचित प्रकार से स्तुति की।

तात्पर्यार्थः:- इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने हनुमान की विनम्रता को वर्णित किया है। भिक्षुक रूप धारण करने के बाद हनुमान राम लक्ष्मण के आगमन का कारण जानने के लिए उनके समीप गया। वहाँ आकर उसने विनम्रता से पहले उन दोनों को प्रणाम किया। भिक्षुरूप हनुमान ने राम और लक्ष्मण को प्रणाम किया। गृहस्थों को भिक्षुओं के प्रति प्रणाम करना चाहिए ऐसा ज्ञात है। उसके बाद हनुमान ने अपने मधुर वचनों से उन दोनों की उचित प्रकार से प्रशंसा की। उचित प्रकार से प्रशंसा को करके हनुमान ने उन दोनों की मिथ्या स्तुति नहीं की ऐसा महर्षि वाल्मीकि बताना चाहते हैं। उसके बाद उसने अपनी सुमधुर सुमनोहर और रमणीय वाणी से उन दोनों के साथ वार्तालाप आरम्भ किया। इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने हनुमान के वाणी माधुर्य को भी वर्णित किया है।

ध्यान दें:

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- सुमनोज्ञा- सुष्ठु मनोज्ञं सुमनोज्ञम्, गति समास।
- उपागम्य- उप + गम् धातु + ल्यप् प्रत्यय।
- प्रणिपत्य- प्र + नि + पत् धातु + ल्यप् प्रत्यय।
- आबभाषे- आ + भाष् धातु + लिट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन।
- प्रशशंस- प्र + शंस् धातु + लिट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन।

सन्धि युक्त शब्द

- ततश्च- ततः + च विसर्ग सन्धि।
- विनीतवदुपागम्य- विनीतवत् + उपागम्य जश्त्व सन्धि

प्रयोग परिवर्तन- ततः विनीतवत् हनुमता तौ वीरौ राघवौ उपागम्य प्रणिपत्य च श्लक्ष्णया सुमनोज्ञया वाचा आबभाषे यथावत् प्रशशंसे च।

संपूज्य विधिवद् वीरौ हनुमान् वानरोत्तमः॥4॥
उवाच कामतो वाक्यम् मृदु सत्यपराक्रमौ।

अन्वय- वानरोत्तमः हनुमान् वीरौ सत्यपराक्रमौ राम लक्ष्मणौ विधिवत् संपूज्य कामतः मृदु वाक्यम् उवाच।

अन्वयार्थः- वानरों में उत्तम मर्कट श्रेष्ठ हनुमान वीर, सत्य पराक्रमी उन दोनों राम और लक्ष्मण की उचित प्रकार से पूजा सत्कार करके सुग्रीव की इच्छा से मृदु वचनों को कहा।

सरलार्थः- हनुमान नें राम और लक्ष्मण के समीप जाकर, प्रारम्भ में विधिवत् उन दोनों का पूजन किया। फिर सुग्रीव की इच्छानुसार उसने अपनी मधुर वाणी से उन दोनों के साथ मृदु वाक्यों को कहना आरम्भ किया।

तात्पर्यार्थः- सुग्रीव के आदेश से हनुमान भिक्षु वेश को धारण करके राम और लक्ष्मण के समीप गया। और उन दोनों को प्राप्त कर उसने अतिथि पूजन के विषय में जिस प्रकार की विधि निर्दिष्ट है, उसके अनुसार उन दोनों सत्यपालक का पूजन किया। राम लक्ष्मण दोनों सत्य पराक्रमी हैं, उन दोनों की महिमा को जानते हैं। इसीलिए उन दोनों की हनुमान ने पूजा की। शिष्ट व्यक्ति सदैव ही पूजनीयों का पूजन करते हैं। इसीलिए हनुमान भी पूजनीय राम लक्ष्मण के पूजन से शिष्ट मार्ग का ही पथिक ज्ञात होता है। वस्तुतः हनुमान ने राम के ऊपर उसकी भक्ति से ही उसके पूजन को किया यह भी कहा जा सकता है। पूजा के बाद हनुमान ने जिस लिए सुग्रीव ने उसे यहाँ भेजा उसका स्मरण करके अपने मधुर वचन से वह कहना आरम्भ किया। हनुमान वानरों में श्रेष्ठ है इससे महर्षि हनुमान की महिमा को सूचित करते हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- संपूज्य- सम् + पूज् धातु + ल्यप् प्रत्यय।
- वानरोत्तमः- वानराणाम् उत्तमः वानरोत्तमः - षष्ठी तत्पुरुष
- उवाच- वच् धातु + लिट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन।

- सत्यपराक्रमौ- सत्यम् एव पराक्रमः ययौस्तौ सत्यपराक्रमौ।- बहुव्रीहि समास।

सन्धि युक्त शब्द

- विधिवद्वीरौ - विधिवत् + वीरौ। जश्त्व सन्धि।
- कामतो वाक्यम् - कामतः + वाक्यम् विसर्ग सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- वानरोत्तमेन हनुमता वीरौ सत्यपराक्रमौ रामलक्ष्मणौ विधिवत् संपूज्य कामतः मृदु वाक्यम् ऊचे।

ध्यान दें:

राजर्षिदेवप्रतिमौ तापसौ संशितव्रतौ॥5॥
देशम् कथम् इमम् प्राप्तौ भवन्तौ वरवर्णिनौ।
त्रासयन्तो मृगगणान् अन्यांश्च वनचारिणः॥6॥

अन्वय- राजर्षिदेवप्रतिमौ संशितव्रतौ वरवर्णिनौ, मृगगणान् अन्यान् वनचारिणः च त्रासयन्तौ भवन्तौ तापसौ इमं देशं कथं प्राप्तौ।

अन्वयार्थः- राज ऋषियों और देवताओं की आकृति के जैसे, तीक्ष्ण व्रत के पालक, ब्रह्मचारियों में श्रेष्ठ और हिरणों का समूह जिस वनचारी से त्रासित होता है। अपने तेज को धारण करके आप तपस्वी इस प्रदेश किस कारण से आए।

सरलार्थः- हनुमान ने उन दोनों राम लक्ष्मण की पूजा, प्रशंसादि करके उन दोनों से पूछा कि राजऋषियों और देवताओं की जिस प्रकार की आकृति होती है। उस प्रकार की आकृति वाले आप दोनों कठोर व्रत के पालक हैं। किन्तु आप दोनों ब्रह्मचारी वनस्थान को, मृगों को और अन्य वनचारी जीवों को भयभीत करते हुए किस प्रकार से इस दुर्गम देश को आए हैं।

तात्पर्यार्थः- राम लक्ष्मण ऋष्यमूक पर्वत की ओर आ गए। इसीलिए प्रस्तुत श्लोक में हनुमान ने उन दोनों के आगमन का कारण पूछा। देवऋषियों और देवताओं की जैसी आकृति होती है, राम लक्ष्मण के शरीर की भी वैसी ही आकृति थी। और वे दोनों तपस्वी कठोर व्रत पालक थे। ब्रह्मचर्य पालन से ब्रह्मचारियों में महान तेज उत्पन्न होता है, जिससे साधारण व्यक्ति कुछ त्रस्त होते हैं। इसीलिए राम लक्ष्मण के ब्रह्मचर्य तेज के प्रभाव से वन में स्थित मृग और अन्य वन्य जीव भयभीत हुए। इसीलिए हनुमान ने उन दोनों से पूछा कि सुन्दर आकृति वाले और ब्रह्मचर्य तेज से विशिष्ट आप दोनों तपस्वी, जहाँ साधारण व्यक्ति नहीं आते हैं वैसे इस दुर्गम देश में कैसे आए। वस्तुतः प्रस्तुत इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने राम लक्ष्मण के शारीरिक सौन्दर्य को, कठोर व्रत का पालक को और ब्रह्मचर्य तेज के प्रभाव को वर्णित किया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- राजर्षिदेवप्रतिमौ - राजर्षयः च देवाश्च राजर्षिदेवाः। इतरेतरद्वन्द्व समास।
- संशितव्रतौ - संशितौ तीक्ष्णौ व्रतौ ययोस्तौ संशितव्रतौ - बहुव्रीहि समास।
- वरवर्णिनौ- वरौ च तौ वर्णिनौ- कर्मधारय समास।
- त्रासयन्तौ- त्रास धातु + णिच् प्रत्यय + शतृ प्रत्यय प्रथमा बहुवचन।
- मृगगणान् - मृगानां गणाः मृगगणाः षष्ठी तत्पुरुष।

ध्यान दें:

- वनचारिणः – वने चरन्ति।

सन्धि युक्त शब्द

- अन्यांश्च – अन्यान् +च हल सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन– राजर्षिदेवप्रतिमाभ्यां संशितव्रताभ्यां वरवर्णिभ्यां, मृगगणान् अन्यान् वनचारिणः च त्रासयद्भ्यां तापसाभ्याम् अयं देशः कथं प्राप्तः।

पम्पातीररुहान् वृक्षान् वीक्षमाणौ समन्ततः।
इमाम् नदीं शुभजलां शोभयन्तौ तरस्विनौ॥7॥
धैर्यवन्तो सुवर्णाभौ कौ युवाम् चीरवाससौ।
निःश्वसन्तौ वरभुजौ पीडयन्ताविमाः प्रजाः॥8॥

अन्वय– समन्ततः पम्पातीररुहान् वृक्षान् वीक्षमाणौ इमां शुभजलां नदीं शोभयन्तौ तरस्विनौ धैर्यवन्तौ सुवर्णाभौ चीरवाससौ निःश्वसन्तौ वरभुजौ इमाः वन्याः प्रजाः पीडयन्तौ युवां कौ।

अन्वयार्थः– चारों ओर पम्पा तीर पर वृक्षों को देखते हुए और इस पवित्र जल वाली नदी को सुशोभित करते हुए अतिबलशाली, धैर्यशाली, स्वर्ण कान्ति शरीर वाले, जीर्ण वस्त्रधारी और अपने लम्बी श्वास खींचने से थके हुए, सुन्दर भुजाओं वाले, अपने प्रभाव से वन्य जीवों को पीड़ित करते हुए आप दोनों कौन हैं।

सरलार्थः– हनुमान ने राम और लक्ष्मण से पूछा कि पम्पा सरोवर के तट पर स्थित वृक्षों को देखते हुए और इस पवित्र स्वच्छ पम्पा नदी को अपने सौन्दर्य से अलंकृत करते हुए अत्यन्त बलशाली, स्वर्ण जैसी कान्ति विशेष शरीर वाले, धैर्यवान, जीर्ण वस्त्रों को धारण करते हुए, वन में संचरण करने से थके हुए, सुन्दर भुजाओं से सम्पन्न इन वन्य जीवों को अपने दुःख दर्शन से पीड़ित करते हुए आप दोनों कौन हैं।

तात्पर्यार्थः– प्रस्तुत इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने, जहाँ हनुमान राम लक्ष्मण के परिचय को जानने के लिए आए' उस स्थान को वर्णित किया है। और वह स्थान पम्पा सरोवर तीर है। पम्पा सरोवर का जल अत्यन्त पवित्र था। अत्यन्त बलवान उन दोनों राम लक्ष्मण ने पम्पा सरोवर के तट पर बड़े वृक्षों को देखा था। उन दोनों के सौन्दर्य से वह सरोवर शोभित हुआ।

स्वर्ण की जैसी कान्ति होती है वैसी ही कान्ति उन दोनों के शरीर में थी। किन्तु इस प्रकार की कान्ति से युक्त शरीर होने पर भी उन दोनों के परिधान अत्यन्त जीर्ण थे। सुन्दर बाहु विशिष्ट आप दोनों पूरे दिन को व्याप्त कर इस स्थान को प्राप्त करने के लिए वन में संचार कर रहे हैं। इसीलिए वन संचरण से दोनों अत्यन्त थक गए। उन दोनों का यह थका हुआ रूप देखकर वन्य जीव भी पीड़ित हुए। इसलिए हनुमान ने पूछा कि पम्पा सरोवर के तट पर वृक्षों को देखा और अपने सौंन्दर्य से उस सरोवर को सुशोभित करने वाले, स्वर्ण के समान आकृति वाले भी जीर्ण वस्त्रधारी विशाल भुजाओं से सम्पन्न वन संचरण से थके हुए और अपने दुःख के दर्शन से अन्य वन्य जीवों को पीड़ित करने वाले आप दोनों कौन हैं, आपका क्या परिचय है, किस कारण से इस दुर्गम देश को आए। वस्तुतः यहाँ पम्पा सरोवर के विस्तार के कारण उसके लिए नदी का प्रयोग किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- पम्पातीररुहान– पम्पायाः तीरं पम्पातीरम्– षष्ठी तत्पुरुष समास

- वीक्ष्माणौ- वि + ईक्ष् धातु + शानच् प्रत्यय, प्रथमा द्विवचन।
- धैर्यवन्तौ- धैर्यम् अस्य अस्ति। धैर्य + मतुप्
- सुवर्णाभौ - सुवर्णा आभा ययोस्तौ सुवर्णाभौ - बहुव्रीहि समास।
- चीरवाससौ - चीरं वास: ययोस्तौ - बहुव्रीहि समास।
- वरभुजौ- वरौ भुजौ ययोस्तौ- बहुव्रीहि समास।
- पीड्यन्तौ - पीड धातु + शतृ प्रत्यय। प्रथमा द्विवचन।

ध्यान दें:

सन्धि युक्त शब्द

- पीड्यन्ताविमा: - पीडयन्तौ + इमा:। अच् सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन-

- समन्तत: पम्पातीररुहान् वृक्षान् वीक्षमाणाभ्याम् इमां शुभजलां नदीं शोभयद्भ्यां तरस्विभ्यां धैर्यवद्भ्यां सुवर्णाभ्यां चीरवासोभ्यां नि:श्वसद्भ्यां वरभुजाभ्याम् इमा: वन्या: प्रजा: पीडयद्भ्यां युवाभ्यां काभ्यां भूयते।

सिंहविप्रेक्षितौ वीरौ महाबलपराक्रमौ।
शक्रचापनिभे चापे गृहीत्वा शत्रुनाशनौ।।9।।

अन्वय- सिंहविप्रक्षितौ शक्रचापनिभे चापे गृहीत्वा शत्रुनाशनौ महाबलपराक्रमौ वीरौ युवां कौ।

अन्वयार्थ:- सिंह के समान दृष्टि, सिंह के समान बल और पराक्रम, इन्द्र के धनुष के समान धनुष को ग्रहण करके, शत्रुओं को नष्ट करने की शक्ति रखते हुए, महा बलशाली, महा पराक्रमी आप दोनों वीर कौन हैं।

सरलार्थ:- सुग्रीव सचिव हनुमान राम लक्ष्मण से पूछते हैं की सिंह से अत्यधिक बलवान इन्द्र के धनुष के जैसे धनुष को लेकर शत्रुओं के नाशक, महाबलशाली वीर आप दोनों कौन हैं।

तात्पर्यार्थ:- प्रस्तुत इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने हनुमान के मुख से राम लक्ष्मण की वीरता को वर्णित किया है। जैसे पशुओं के राजा सिंह की दृष्टि के सामने स्थित होना सदैव भयंकर होता है, उसी प्रकार राम लक्ष्मण के द्वारा देखना था। आप दोनों सिंह से भी अधिक बलवान थे। महाबलशाली आप दोनों के पराक्रम से शत्रु भी भयभीत हुए। इन्द्र के धनुष का लक्ष्य जैसे कभी व्यर्थ नहीं होता, वैसे ही आप दोनों के धनुष का लक्ष्य भी व्यर्थ नहीं होता है। इसीलिए हनुमान ने उन दोनों से पूछा कि सिंह से भी अधिक बलशाली, महापराक्रमी इन्द्र धनुष के समान धनुर्धारी आप दोनों कौन हैं, अथवा आप दोनों का क्या परिचय है, किस कारण से इस दुर्गम देश में आए।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- सिंहविप्रेक्षितौ - सिंहस्य विप्रेक्षितं प्रेक्षणं - षष्ठी तत्पुरुष समास।
- महाबलपराक्रमौ - महत् च तत् बलं महाबलम्- कर्मधारय समास
- शक्रचापनिभे - शक्रस्य चाप:। - षष्ठी तत्पुरुष समास।
- शत्रुनाशनौ- शत्रूणां नाशनौ -षष्ठी तत्पुरुष समास।

ध्यान दें:

प्रयोग परिवर्तन-

- सिंहविप्रक्षितौ शक्रचापनिभे चापे गृहीत्वा शत्रुनाशनाभ्यां महाबलपराक्रमाभ्यां वीराभ्यां युवाभ्यां काभ्यां भूयते।

अलंकार आलोचना- इस श्लोक में उपमा अलंकार है। उपमा अलंकार के चार अंश होते हैं। और वे उपमेय, उपमान, सादृश्यवाचक पद, सादृश्य धर्म है। उपमा दो प्रकार की होती है- पूर्णोपमा और लुप्तोपमा। जहाँ ये चारों अंश ही रहते हो वह पूर्णोपमा होती है। और जहाँ ये चारों के मध्य कोई एक अथवा उससे अधिक अंश न रहता हो वह लुप्तोपमा होती है। यहाँ उपमेय चाप है। उपमान शक्रचाप है। सादृश्यवाचक पद है। सादृश्य धर्म शत्रुनाशकत्वम् है। इस श्लोक में चार अंश है इसीलिए पूर्णोपमा है।

श्रीमन्तौ रूपसंपन्नो वृषभश्रेष्ठविक्रमौ।
हस्तिहस्तोपमभुजौ द्युतिमन्तौ नरर्षभौ॥10॥

अन्वय- श्रीमन्तौ रूपसंपन्नौ वृषभश्रेष्ठविक्रमौ हस्तिहस्तोपमभुजौ द्युतिमन्तौ नरर्षभौ युवां कौ।

अन्वयार्थः- कान्तिमान, सौन्दर्य से युक्त, सांड के समान पराक्रमी, हाथी की सूंड के समान हाथ वाले, तेजस्वी, मनुष्यों में श्रेष्ठ आप दोनों कौन हैं

सरलार्थः- वानरों में श्रेष्ठ हनुमान ने राम लक्ष्मण से पूछा कि कान्ति मान, सौन्दर्य युक्त, उत्तम सांड के पराक्रम के सदृश पराक्रमी, हाथी की सूंड के समान भुजाओं वाले, मनुष्यों में श्रेष्ठ आप दोनों कौन हैं।

तात्पर्यार्थः- प्रस्तुत इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि हनुमान के माध्यम से राम लक्ष्मण के सौन्दर्य और वीरता की प्रशंसा करते हैं। राम लक्ष्मण वन में रहते हुए, वन में प्राप्त भोजन को खाते हुए, फिर भी राज पुत्र के समान कान्तिमान और सौन्दर्यशाली थे। सांडों में श्रेष्ठ सांड का जैसा पराक्रम होता है, ये दोनों उसी प्रकार पराक्रमशाली थे। हाथी की सूंड में जैसी शक्ति होती है, उन दोनों की भुजाओं में वैसी ही शक्ति थी। ये दोनों ब्रह्मचर्य व्रत के पालन से महा तेजस्वी थे। ये दोनों मनुष्यों में श्रेष्ठ थे। इसीलिए हनुमान ने पूछा कि इस प्रकार से सौन्दर्यवान, ऐसे शक्तिमान आप दोनों कौन हैं, आप दोनों का परिचय क्या है, किस कारण से आप दोनों इस दुर्गम देश को आए।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- रूपसंपन्नौ- रूपेण संपन्नौ इति- तृतीय तत्पुरुष समास
- वृषभश्रेष्ठविक्रमौ- वृषभेषु श्रेष्ठः वृषभश्रेष्ठः सप्तमी तत्पुरुष समास। वृषभश्रेष्ठस्य विक्रमः वृषभश्रेष्ठविक्रमः- षष्ठी तत्पुरुष समास।
- हस्तिहस्तोपमभुजौ- हस्तिनः हस्तौ हस्तिहस्तौ इति षष्ठी तत्पुरुष समास। हस्तिहस्तौ उपमा ययौस्तौ हस्तिहस्तोपमभुजौ इति- बहुव्रीहि समास।
- नरर्षभौ- नरेषु ऋषभौ नरर्षभौ - सप्तमी तत्पुरुष समास।

प्रयोग परिवर्तन- श्रीमद्भ्यां रूपसंपन्नाभ्यां वृषभश्रेष्ठविक्रमाभ्यां हस्तिहस्तोपमभुजाभ्यां द्युतिमद्भ्यां नरर्षभाभ्यां (युवाभ्यां काभ्यां भूयते)।

अलंकार आलोचना- इस श्लोक में उपमा अलंकार है। उपमा अलंकार के चार अंश होते हैं। और वे उपमेय, उपमान, सादृश्यवाचक पद, सादृश्य धर्म है। उपमा दो प्रकार की होती है- पूर्णोपमा और

ध्यान दें:

लुप्तोपमा। जहाँ ये चारों अंश ही रहते हो वह पूर्णोपमा होती है। और जहाँ ये चारों के मध्य कोई एक अथवा उससे अधिक अंश न रहता हो वह लुप्तोपमा होती है। यहाँ उपमेय भुजौ है। उपमान हस्तिहस्तौ है। सादृश्यवाचक पद ही उपमा है। सादृश्यधर्म शक्तिमत्त्वम् है। सादृश्यधर्म के नहीं होने से इस श्लोक में लुप्तोपमा है।

पाठगत प्रश्न

1. हनुमान किसके वचन से जानने के लिए ऋष्यमूक पर्वत गए?
2. हनुमान किस पर्वत से गए?
3. हनुमान किसका पुत्र था?
4. हनुमान क्या रूप धारण करके रामलक्ष्मण के समीप गया?
5. हनुमान ने किस प्रकार की वाणी से राम लक्ष्मण की प्रशंसा की?
6. राम लक्ष्मण ने किन को त्रासित करके उस देश को प्राप्त किया?
7. राम लक्ष्मण ने किस नदी के तीर पर वृक्षों को देखा था?
8. पम्पानदी किस प्रकार की थी?
9. राम लक्ष्मण किस को पीड़ित कर रहे थे?
10. राम लक्ष्मण ने कैसे धनुष को धारण किया था?
11. राम लक्ष्मण की भुजाएँ कैसी थी?
12. राम हनुमान का प्रथम संवाद रामायण के किस काण्ड में है?

    क. किष्किन्धाकाण्डे   ख. अरण्यकाण्डे

    ग. सुन्दरकाण्डे   घ. युद्धकाण्डे
13. हनुमान किस पर्वत से राम लक्ष्मण के समीप गया।

    क. हिमालयः   ख. विन्ध्यः

    ग. ऋष्यमूकः   घ. अयोध्या
14. हनुमान ने क्या रूप को धारण किया।

    क. मनुष्यरूपम्   ख. भिक्षुरूपम्

    ग. ब्राह्मणरूपम्   घ. राजरूपम्
15. राम लक्ष्मण किस नदी के तीर पर उपस्थित थे।

    क. गंगा   ख. यमुना

    ग. पद्मा   घ. पम्पा

16. हस्तिहस्तोपमभुजौ यहाँ कौन-सा अलंकार है?

क. रूपकालंकार ख. दृष्टान्तालंकार

ग. उपमालंकार घ. अनुप्रासालंकार

17. क-स्तम्भ के साथ ख-स्तम्भ मिलाओ-

क- स्तम्भ	ख- स्तम्भ
1. पुप्लुवे	क. भाषितवान्
2. रामायणम्	ख. कपिः
3. आबभाषे	ग. उक्तवान
4. पम्पा	घ. प्राप
5. हनुमान्	ङ. जगाम
6. भेजे	च. पर्वतः
7. ऋष्यमूकः	छ. वाल्मीकिः
8. उवाच	ज. शुभजला

पाठ सार

वनवास काल में सीता को ढूँढ़ने हेतु सहायता प्रार्थना के लिए श्री राम भाई लक्ष्मण के साथ सुग्रीव के पास पम्पा सरोवर के तट पर मिलने गए। वहाँ से कुछ दूर ऋष्यमूक पर्वत पर वानरों के राजा सुग्रीव भाई बाली के भय से छिपकर निवास करते थे। उस सुग्रीव ने दूर से धनुष बाण इत्यादि शस्त्रों से युक्त बड़ी भुजाओं से सम्पन्न दो तपस्वियों को देखा। इसीलिए उसने सोचा कि उसके भाई बाली ने उसे मारने के लिए यहाँ दो शस्त्रधारी भेजे। इसीलिए वह अत्यन्त डर गया। उसका सचिव हनुमान था। इसीलिए पम्पा सरोवर के तट पर स्थित दो तपस्वी किस कारण से यहाँ आए हैं, यह जानने के लिए सुग्रीव ने हनुमान को आदेश दिया। और हनुमान राजा की आज्ञानुसार अपने वानर रूप को छोड़कर भिक्षुक के वेश से उन दोनों के पास गए।

वहाँ जाकर उसने सर्वप्रथम अतिथि ज्ञान से उन दोनों को प्रणाम किया। फिर विधि के अनुसार उन दोनों का पूजन करके अपने सुमधुर मनोहर वचनों से उन दोनों की प्रशंसा करनी आरम्भ की। राम लक्ष्मण अपने ब्रह्मचर्य तेज से वन में स्थित मृगों और अन्य जीवों को पीड़ित कर रहे थे। उनके सौन्दर्य प्रभाव से पवित्र जल वाला पम्पा सरोवर भी शोभित हो रहा था। पूरे दिन को बिताकर वे दोनों भ्राता वन में भ्रमण करके थक गए। उन दोनों के इस प्रकार के कष्ट को देखकर तो अन्य वन्य जीव भी दुःखी हुए। उन दोनों के शरीर की कान्ति स्वर्ण के समान थी, किन्तु उन दोनों के परिधान में केवल दो जीर्ण वस्त्र थे। उन दोनों का धनुष इन्द्र के धनुष के समान लक्ष्य भेद था। हाथी की सूंड के समान बल युक्त हाथों वाले वे दोनों रूप सम्पन्न राम लक्ष्मण सभी मनुष्यों में श्रेष्ठ थे। यह इस पाठ का सार है।

आपने क्या सीखा

- गृहस्थों के प्रति भिक्षुओं को प्रणाम करना चाहिए।

पाठ-12

रामायण

ध्यान दें:

ध्यान दें:

- अतिथि सदैव पूजनीय है।
- यदि ब्रह्मचर्य का यथोचित पालन करें तो शरीर में महान तेज उत्पन्न होता है
- किसी का भी परिचय जानकर उसके साथ मधुर वार्तालाप करना चाहिए।
- किसी की भी झूठी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए।

पाठान्त प्रश्न

1. राम लक्ष्मण के साथ हनुमान के प्रथम साक्षात्कार के विषय में संक्षेप में लिखिए?
2. हनुमान कैसे भिक्षुक के वेश से राम लक्ष्मण के पास गया?
3. वहाँ जाने के बाद हनुमान ने क्या-क्या किया। सप्रसंग वर्णित कीजिए?
4. राम लक्ष्मण किस प्रकार से वन्य जीवों को पीड़ित कर रहे थे?
5. राम लक्ष्मण के धनुर्विषय पर संक्षेप से कुछ आलोचित कीजिए?
6. चक्रचापनिभे चापे यहाँ जो अलंकार है, उस विषय में संक्षेप से लिखिए?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1. सुग्रीव का
2. ऋष्यमूक से
3. वायु का
4. भिक्षु रूप
5. सुमधुर और मनोहर
6. मृगों के समूह और अन्य वन्यजीव कों
7. पम्पा नदी
8. पवित्र जल
9. प्रजा को
10. इन्द्र के धनुष के समान
11. हाथी की सूंड के समान

12. क	13. ग	14. ख	15. घ
16. ग			
17. 1. ङ	2. छ	3. क	4. ज
5. ख	6. घ	7. च	8. ग